सामाजिक संस्था संपूर्णा
समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

"आलेख"

'बेरंग दिल्ली; बारंग दिल्ली'

'सम्पूर्ण तालाबंदी : कोरोना हमले का परिणाम'

डॉ शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

आज की मेरी दिल्ली एक ख़ौफ़ में डूबी है। ये दिल्ली तो दिल वालों की थी। बड़ी अलबेली मस्तानी थी। कई बार मिटी, कई बार बसी। इसका इतिहास अनोखा और विस्तृत है।

दिल्ली का इतिहास महाभारत काल से है। अब वर्तमान काल में दिल्ली का इतिहास नए रूप –रंग में लिखा जा रहा है। ऐसा रूप इससे पहले ना किसी इतिहासकार ने देखा और ना ही लिखा।

दिल्ली का भाग्य युद्धों से तय होता रहा है। चाहें वह महाभारत का युद्ध हो या पानीपत की लड़ाइयाँ। मेरे विचार से इस्लामी राज स्थापित होने से पहले दिल्ली के इतिहास को मोटे तौर पर हिंदू काल या राजपूत काल भी कह सकते हैं। इस काल में हमारे पास प्रचंड योद्धा थे। परंतु वह अपने छोटे–छोटे स्वार्थों में राष्ट्र धर्म के स्थान पर अपनी रियासतों और निजी कारणों से विदेशी आक्रमणकारियों से लड़ने की बजाए आपस में ही एक दूसरे से लड़कर और विदेशी आक्रांताओं का साथ देकर समाप्त हो गये।

गजनवी, नादिरशाह, चंगेज खान, तैमूरलंग जैसों की क्या हिम्मत थी कि वह भारत जैसी सोने की चिड़िया को बार–बार लूटते थे और लूट कर चले जाते, अगर उस समय पर भी हम एकजुट होते। इनके बाद ऐसे विदेशी आक्रांता आए जो भारत को अपना घर बना बैठे। उसमें

मुख्यतः सुल्तान, अफगान, गुलाम वंश जैसे वंश थे, जो कुछ वर्षों के लिए अपनी क्रूरता का सबूत इतिहास में दर्ज कराकर समाप्त हो गए।

इन सबके बाद आया मुगलो का एक छत्रराज। जो लगभग 350 वर्ष तक रहा। जिसमें बाबर से लेकर बहादुर शाह ज़फर तक कुछ अच्छे राजा हुए और कुछ बुरे भी राजा हुए। लेकिन उनकी हिंदुओं के मंदिर तोड़ने और उनके धर्मांतरण की एक स्थाई नीति रही। धीरे – धीरे देश में दिल्लीशवरों व जगदीश्वरों अर्थात जो दिल्ली पति हैं वही देश पति हैं की मानसिकता स्थापित हो गई।

इस काल की संस्कृति गंगा जमुनी संस्कृति कहलाई। उस जमाने में दिल्ली बारंग थी। यहां मीर ओ गालिब थे। मुगल बादशाह होली–दिवाली मनाते थे। उसी रंग में लखनऊ के नवाब भी रंगे हुए थे।

फिर दिल्ली में आई अंग्रेजी हुकूमत। उन्होंने दिल्ली को अट्ठारह सौ सत्तावन में कब्जाते समय दिल्ली को बेरंग कर दिया। यहां खून की नदियां बही। शहजादो के सिर काटे गए। शहजादी और शहजादो ने भीख मांगी।

अट्ठारह सौ सत्तावन में हमारे स्वतंत्रता संग्राम का नारा था ख खुदा का, हुकुम बादशाह का। यानी वह लड़ाई शाहजहां संस्कृति के लिए लड़ी गई थी। उसका परिणाम जो हुआ वह इतिहास में निहित है।

कुछ दिनों बेरंगी के बाद दिल्ली फिर बारंग हो गई और फिर इसमें पुराना रंग लौटने लगा। फिर इसमें ना जाने क्यों सांप्रदायिक पाकिस्तानी मानसिकता का रंग घोल दिया गया ।एक तरफ तो सारा भारत और अंग्रेजों के कुछ पिट्ठू व्यक्ति भारत के बंटवारे के ख़लिाफ़ लड़ रहे थे और कुछ अंग्रेज और कुछ व्यक्ति भारत के बंटवारे के लिए लड़ रहे थे। बंटवारा हुआ, करोड़ों घर बर्बाद हो गए। दिल्ली फिर बेरंग हो गई।

बारंग होना दिल्ली का मिजाज है और आजादी के बाद जो दिल्ली बनी वह एक रंगी नहीं थी। उसमें पूर्वांचल, दक्षिण भारत, पंजाब, महाराष्ट्र, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और नगालैंड का भी रंग है और यूं कहो कि दिल्ली अब इतने रंगों में रंग गई थी कि दिल्ली के मिजाज में सारे देश की रंगीनता आ गई थी।

पता नहीं किस दुष्ट की नजर लगी कि यहां पर सब कुछ होते हुए भी इस अदृश्य शत्रु कोरोना वायरस ने हमला कर दिया। चार दीवारी शहरी क्षेत्र के पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक की हमेशा भीड़ भरी सड़के और गलियां वीरान हो गई। नई दिल्ली के आलीशान इलाके, पुनर्वास कॉलोनियों की हलचलें, विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में जवानी की आंखों में पनपते रंगीन सपने, होटलों में उन्मुक्त समाज के खनखनाते जाम सब एक साथ गुम हो गए।

ऐसा दिल्ली के इतिहास में कभी नहीं हुआ कि अपनो के शव भी कभी परिजनों ने लेने से इनकार किया हो। ऐसे ऐसे राजनीतिज्ञ जो समाज सेवा के नाम पर भाषणों के जरिए अपनी रोजी–रोटी चलाते थे चुप होकर बंद हो कर बैठ गए। बच्चे कॉलेज और स्कूल जाने से महरूम हो गए।

दिल्ली के ऐसे प्रवासी मजदूर जिन्होंने दिल्ली को वर्तमान रूप देने के लिए अपना सारा जीवन गवा दिया और जिनके वोट लेने के लिए राजनीतिक पार्टियां साष्टांग दंडवत करती रही, उन्हें भी कोरोना वायरस का भय दिखाकर दिल्ली से भगा दिया गया। किसी ने पैदल, किसी ने बस, ट्रक, दूध के टैंकर, रेलगाड़ी से दिल्ली छोड़ी। बहरहाल काफ़ी प्रवासियों ने दिल्ली छोड़ दी। फिर दिल्ली बेरंग हो गई।

इस कोरोना में सारे रिश्ते खत्म हो गए। इस दिल्ली में रोज कुछ ना कुछ उत्सव होता रहता था। कभी रामलीला होती थी, कभी नवरात्र, कभी रामनवमी मनाई जाती थी, कभी हनुमान जयंती मनाई जाती थी, गणेश उत्सव का कार्यक्रम होता था, निर्जला एकादशी पर शरबत बांटा जाता था, गंगा जी पर गंगा दशहरा की धूम मचती थी, ऐसे सभी कार्यक्रमों पर तालाबंदी हो गई।

हमारी दिल्ली का पुराना रंग कैसे वापस आएगा। मेरे विचार से कोरोना वायरस वैक्सीन जब आएगी तब शायद सब ठीक होगा परंतु इस समय कोरोना से लड़ने के लिए हमारे पास केवल एक ही हथियार है कि हमारे मुंह पर मास्क हो, चेहरे पर शील्ड हो, हाथों में दस्ताने हो, सामाजिक दूरी हो, कोरोना पीड़ितों के लिए दिल में प्यार हो और कोरोना वायरस योद्धाओं जैसे डॉक्टर्स, नर्स, पैरामेडिकल स्टॉफ, फार्मेसिस्ट, सफाई कर्मचारी, रेलवे कर्मचारी और डाक कर्मचारी आदि के लिए सम्मान हो।

हम दिल्ली वालों ने हमेशा लड़ाइयां जीती हैं और अस्थाई रूप से ही कभी बेरंग हो गए हो। किंतु रंगीन दिल्ली, दिलवालों की दिल्ली हमेशा रही है।

मेरी दिल्ली वालों से अपील है कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन का प्रण था कि न ***दैन्यं, न पलायनम्।*** यह हम भारतवासियों के खून में ही है। जब युद्ध शुरू होता है तो ना हम रण छोड़कर भागेंगे और ना ही हथियार डालेंगे।

मुझे विश्वास है कि दिल्ली की कोरोना पर विजय अवश्य होगी और हमारी खोई हुई जिंदगी में रंगीनीया अवश्य लौटेंगी। दिल्ली फिर बारंग होंगी। यहां फिर से उत्सव, रैलियां, जुलूस, सांस्कृतिक कार्यक्रम, धार्मिक आयोजन, राजनीतिक कार्यक्रम एवं धरना प्रदर्शन होंगे।

————————————————————————————